व्यष्टि से
समिष्टि तक की
यात्रा
बूँद बूँद का
सागर समर्पण
अहैतुकी देह का क्षरण
नैसर्गिक भावों का तर्पण
शिखर से शिखा
छू लेने की चाह
अपूर्ण जीवीतिज्ञा
अंतस दाह
संतुष्टि ही समिष्टि है
निष्कर्ष
जीवन को चाहिए
उत्कर्ष।।।।

क्षणिकाएं

बूँद बूँद सागर

लेखक

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

बूँद बूँद सागर

Book **BOONDBOOND SAGAR**

By **Suresh Choudhary 'Indu'**

ISBN : 978-93-94660-70-0

प्रकाशक :

शुक्तिका प्रकाशन

स्वामित्व : ए एंड ए इंटरप्राईजेज

पी 516/4, बी.एल. साहा रोड

कोलकाता-700038

मो. : 8582965531

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

संस्करण : 2025

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

मूल्य : 300/-

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

मन की बात

जीवन का सत्य कभी सम्पूर्ण रूप में नहीं खुलता। वह क्षण-क्षण में, अनुभव-क्षणों की सूक्ष्म तरंगों में, हमारे सामने आता है - कभी हर्ष की आभा में, कभी विषाद की छाया में और कभी किसी गूढ़ मौन में जो शब्दों से परे है। यही तरंगें जब संवेदना से मिलती हैं, तो 'क्षणिका' बन जाती हैं - जीवन के सागर से उठती वे छोटी-सी 'बूंदें', जिनमें सम्पूर्ण 'सागर' का सार निहित होता है।

प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहित क्षणिकाएँ गत दस वर्षों से समय-समय पर आए मन के भावों का त्वरित प्रेषण है, इसमें भाव प्रधान हैं तो कहीं समयानुसार पाई गई कटु स्मृतियों की झलक भी मिलेगी। कुल मिलाकर यह मेरी भावनाओं का मेरे विचारों का एक लेखा-जोखा है जो शब्दों में प्रस्तुत है।

इस पुस्तक "**बूँद बूँद सागर**" में संकलित **146 क्षणिकाएँ** जीवन के विविध आयामों की झिलमिल झलकियाँ हैं - प्रेम, पीड़ा, प्रतीक्षा, आस्था, संघर्ष, अकेलापन, करुणा और आत्मचिंतन के सूक्ष्मतम स्पन्दन। प्रत्येक क्षणिका किसी एक भाव का नहीं, बल्कि उस भाव के पीछे छिपे मानवीय अनुभव के गूढ़ तंतु का अन्वेषण है।

क्षणिका लेखन अपने भीतर एक साधना है - शब्दों के संयम से अर्थ की गहराई तक पहुँचना, अल्प में व्यापक को समेटना। यह पुस्तक उसी साधना की परिणति है। यहाँ कोई

उपदेश नहीं, कोई निर्णय नहीं - केवल जीवन की जीवित झलकें, जो कभी प्रश्न बनकर, कभी उत्तर बनकर पाठक के भीतर उतरती हैं।

''**बूँद बूँद सागर**'' का अर्थ केवल संग्रह नहीं, जीवन-दर्शन है - यह स्मरण दिलाता है कि अस्तित्व का हर क्षण एक बूंद है और हर बूंद में एक सागर छिपा है।

इन्हीं बूंदों में डूबकर पाठक जब स्वयं को देखेगा तो पाएगा कि जीवन उतना सरल नहीं जितना दिखता है और उतना जटिल भी नहीं जितना लगता है - वह बस एक निरंतर बहता अनुभव है।

यदि यह पुस्तक किसी पाठक के मन में एक क्षण भर के लिए भी 'अनुभव का सागर' जगा सके, तो यही इसकी और मेरी रचना का सार्थक प्रतिफल होगा।

—सुरेश चौधरी 'इन्दु'

देव उठावनी एकादशी संवत 2082

तद्नुसार दिनांक : 1 नवम्बर 2025

भूमिका

कविता आस-पास के परिवेश, अनुभव एवं स्मृतियों का दर्पण होती है। समाज की विसंगतियां या स्मृतियाँ जब मन को छूती है तब कविता का जन्म होता है। क्षणिकाएँ भी कविता का सूक्ष्म रूप है। अध्यात्म में जीने वाले कवि, लेखक, रचनाकार **सुरेश चौधरी जी** में यह विशेषता है कि वे हर विधा में निपुण हैं। भक्ति गीतों में तो पारंगत है हीं, जिसमें हर दिन रचना लिखने में अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। साधारणतया इनकी भाषा क्लिष्ट होती है किन्तु ''**बूँद बूँद सागर**'' पुस्तक में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है जो पाठक के मन मे सीधे उतरती है। गद्य-पद्य सभी विधाओं से गुजरते हुए इन क्षणिकाओं में भावों की प्रधानता दिखाई देती है। सार्थक कविताएँ तभी लिखी जा सकती है जब मन पारदर्शी हो।

कवि यहाँ स्मृतियों में डूबा हुआ दिखाई देता है। स्मृतियाँ हृदय-पटल से मिटाई नहीं जा सकतीं, वे जोंक की तरह चिपकी रहतीं हैं जो समय-समय पर जीवंत हो उठती हैं। दरअसल कवि स्मृतियों में ही जीता है, जिनके बिना कविता नीरस हो जाती है। अनुभव स्मृतियों का ही रूप है। एक उम्र के बाद अनुभवों का खजाना अधिक खुलने लगता है। इसी कारण से क्षणिकाएँ बहुत सार्थक बन पड़ी हैं। जैसे स्मृतियों की धुंध में छिपे वे दिन, गौरैया दिवस पर, बुढ़ापा झील के उस पार इत्यादि।

कुल मिलाकर सुरेश जी की क्षणिकाओं में उनका भिन्न रूप सामने आया है। जीवन के विविध रूपों द्वारा अपनी संवेदनाओं और अनुभूतियों को साँचे में ढालकर प्रस्तुत किया है।

मैं रचनाकार सुरेश जी के स्वस्थ जीवन की मंगलकामना करती हूँ। उनकी लेखनी जीवन्त रहे, इसी मंगलकामना के साथ-

—विद्या भंडारी

समीक्षा

"बूँद बूँद सागर" - संवेदना और दर्शन से भरी काव्य यात्रा

लेखक - सुरेश चौधरी 'इंदु'

साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देकर व्यक्ति और समाज के बीच सेतु का कार्य करना है। इसी परंपरा में **कवि सुरेश चौधरी 'इंदु'** की कृति **"बूँद बूँद सागर"** आती है।

यह काव्य-संग्रह अपने शीर्षक की तरह ही गहराई और विस्तार से भरा हुआ है।

कवि ने 'बूंद' को प्रतीक बनाकर जीवन, प्रेम, समाज, प्रकृति और आत्मा के अनगिनत रूपों को प्रस्तुत किया है। हर कविता एक स्वतंत्र बूंद की तरह है, परंतु जब वे मिलती हैं, तो संवेदनाओं का सागर बन जाती हैं।

लेखक परिचय

सुरेश चौधरी 'इंदु' समकालीन हिंदी कविता के ऐसे कवि हैं जो जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों में भी दर्शन खोज लेते हैं। उनकी कविता में सादगी और गहराई का अद्भुत मेल है। वे न केवल भावुक कवि हैं, बल्कि चिंतनशील और दार्शनिक भी हैं। उनकी रचनाएँ मानवीय करुणा, आत्मानुभूति और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना से ओत-प्रोत हैं।

कृति का परिचय और विषय-वस्तु

"बूँद बूँद सागर" में कवि ने 'बूंद' को जीवन का प्रतीक बनाया है। बूंद यहाँ केवल जल की बूँद नहीं, बल्कि अस्तित्व की छोटी-छोटी अनुभूतियों का प्रतिनिधित्व करती है। कवि दिखाता है कि जीवन अनेक बूंदों से बना सागर है - हर अनुभव, हर भावना जीवन को पूर्ण बनाती है।

बूंद कभी प्रेम की कोमलता का प्रतीक बनती है, कभी त्याग और संघर्ष का और कभी अस्तित्व की क्षणभंगुरता का। कवि के अनुसार, बूंद नश्वर भी है क्योंकि वह गिरकर मिट्टी में मिल जाती है और शाश्वत भी है क्योंकि उसी से जीवन का चक्र चलता रहता है। यह विचार भारतीय दर्शन की उस भावना से मेल खाता है जिसमें प्रत्येक क्षण को अनंत का अंश माना गया है।

भाषा, शिल्प और शैली

'इंदु' की भाषा सरल, प्रवाहमयी और भावपूर्ण है। उन्होंने न तो संस्कृतनिष्ठ जटिलता अपनाई है, न ही अत्यधिक आधुनिक शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा सादगी के साथ काव्यात्मकता का सुंदर उदाहरण है। कविताओं में स्वाभाविक प्रवाह है - जैसे झरने का जल बहता है, वैसे ही उनके शब्द सहज रूप से बहते हैं।

शिल्प की दृष्टि से कवि ने मुक्त छंद का प्रयोग किया है, जिसमें लय और संगीतात्मकता का सुंदर संतुलन है। कविताओं में रूपक, उपमा, अनुप्रास और पुनरुक्ति जैसे अलंकारों का

प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। कवि की शैली में कृत्रिमता नहीं, बल्कि सादगी और आत्मीयता का सौंदर्य है।

भावनात्मक गहराई और अनुभव संसार

''बूँद बूँद सागर'' की कविताएँ हृदय की गहराइयों से निकली प्रतीत होती हैं। कवि जीवन के प्रत्येक रूप में सुंदरता और अर्थ खोजता है - चाहे वह प्रेम हो या पीड़ा, अकेलापन हो या समाज के प्रति चेतना। कहीं वह बूंद को प्रेम की कोमल छुअन बनाता है, तो कहीं सागर को आत्मा की विशालता का प्रतीक।

कविताओं में प्रकृति और मनुष्य के संबंध को गहराई से चित्रित किया गया है। कवि के लिए बूंद केवल जल नहीं, बल्कि अनुभव, स्मृति और आशा का रूप है। यह दृष्टिकोण कवि के दार्शनिक और संवेदनशील मन की झलक देता है। वह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हर छोटी चीज़ जीवन के बड़े अर्थों से जुड़ी होती है।

प्रस्तुत क्षणिका

''गगन पर विभावरी आभा, तिमिर को कुछ हद तक दूर करने का प्रयास करती है, दीपक जले गात भी पूर्ण अंधकार विलुप्त होगा, कुछ पाने को जलना ही पड़ता है।''

यह क्षणिका जीवन और संघर्ष के बीच आशा के महत्व को अत्यंत सरल किंतु गहन प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करती है। कवि ने ''विभावरी आभा'' (रात्रि की उजली छटा) और ''तिमिर'' (अंधकार) को एक दार्शनिक रूपक के रूप में प्रस्तुत किया है। यहाँ ''गगन पर विभावरी आभा'' उस छोटी-

सी रोशनी का प्रतीक है जो जीवन के अंधकार में भी उम्मीद की किरण जगाती है।

कवि कहते हैं कि यह आभा ''कुछ हद तक'' अंधकार को दूर करती है - अर्थात् जीवन में केवल आशा पर्याप्त नहीं, प्रयत्न भी आवश्यक है। जब कवि आगे कहते हैं-

''**दीपक जलेगा तभी पूर्ण अंधकार विलुप्त होगा,**'' तो यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि केवल बाहरी रोशनी नहीं, बल्कि भीतर का दीपक - यानी परिश्रम, त्याग और आत्मविश्वास - ही अंधकार (अज्ञान, निराशा, असफलता) को पूर्ण रूप से मिटा सकता है।

अंतिम पंक्ति

''**कुछ पाने को जलना ही पड़ता है,**'' कविता का सार है। यह पंक्ति कर्मयोग और जीवन के यथार्थ दर्शन को व्यक्त करती है। 'जलना' यहाँ कष्ट नहीं, बल्कि आत्म बलिदान और निरंतर परिश्रम का प्रतीक है। कवि यह संदेश देते हैं कि सफलता बिना संघर्ष के संभव नहीं; जिस प्रकार दीपक स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने प्रयत्नों से जीवन का सच्चा प्रकाश उत्पन्न करना होता है।

संक्षेप में, यह कविता आशा, प्रेरणा और कर्म के दर्शन को अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रकट करती है। इसकी भाषा सहज, प्रतीकात्मक और प्रेरणादायी है - जो पाठक को न केवल सोचने पर, बल्कि कुछ कर दिखाने की प्रेरणा भी देती है।

दर्शन और चिंतन

'इंदु' की कविताएँ केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि गहरे दार्शनिक चिंतन की भी प्रतीक हैं। बूंद और सागर के माध्यम से कवि ने जीवन और मृत्यु, व्यक्ति और समाज, क्षण और अनंत के संबंधों को उजागर किया है। कवि का मानना है कि प्रत्येक मनुष्य का छोटा-सा कर्म भी सृष्टि के संतुलन को प्रभावित करता है।

उनकी पंक्तियाँ पाठक को भीतर झाँकने के लिए प्रेरित करती हैं। कवि कहता है कि सागर हमारे भीतर ही है और बूंद उस आत्मिक अनुभव का प्रतीक है जो हमें अपने अस्तित्व से जोड़ती है। इस प्रकार उनकी कविता आत्ममंथन की प्रेरणा देती है और जीवन को देखने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है।

सामाजिक सरोकार

इस संग्रह में आत्मानुभूति के साथ-साथ सामाजिक चेतना भी विद्यमान है। कवि ने समाज में व्याप्त असमानता, नैतिक संकट और आत्म केंद्रितता की आलोचना की है, परंतु उसकी आलोचना कटु नहीं, बल्कि सुधारात्मक है। कवि आशा और परिवर्तन में विश्वास रखता है। उसका मानना है कि जैसे बूंदें मिलकर सागर बनाती हैं, वैसे ही छोटे-छोटे प्रयास मिलकर समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। यह दृष्टिकोण कवि को एक सामाजिक रूप से जागरूक सृजनकर्ता के रूप में स्थापित करता है।

काव्य-सौंदर्य और सीमाएँ

यह कृति यह संदेश देती है कि जीवन का हर अनुभव महत्वपूर्ण है - हर बूंद सागर का हिस्सा है, हर भावना मानवता की धारा में योगदान करती है। इस दृष्टि से ‘‘बूँद बूँद सागर’’ आधुनिक हिंदी कविता में एक सार्थक योगदान है, जो पाठक को सोचने, महसूस करने और आत्मबोध के नए आयाम खोजने की प्रेरणा देती है।

निष्कर्ष

‘‘बूँद बूँद सागर’’ एक ऐसी कृति है जो भावनाओं, दर्शन और काव्य सौंदर्य - तीनों का संगम प्रस्तुत करती है। यह केवल कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। सुरेश चौधरी ‘इंदु’ ने अपनी संवेदनशीलता और आत्मानुभव को इस तरह व्यक्त किया है कि पाठक अपने भीतर झाँकने को प्रेरित होता है।

—डॉ. उर्वशी श्रीवास्तव

(पूर्व-एसोसियेट प्रोफेसर)

उपाधि - ‘‘काव्य अलंकार श्री’’

अवार्ड - विदुषी अवार्ड

- कलम के सिपाही

- शिक्षाविद् सम्मान

- वुमेन पावर एंड वायस

कोलकाता (प. बंगाल)

सम्पर्क नं. : 8726736531

ई मेल आईडी - thinkinklink1@gmail.com

(1)

झोपड़ी की
मिट्टी की दीवारें,
बिताए दिन
बारिश की बूंदों संग,
हँसी-खुशी
वो सादगी,
यादों में बसी यादें
भूल कर भी न भूलें
ऐ गाँव तेरे वादे।

(2)

चूल्हे की आग पर
रोटी सेंकते,
गांव की शामें,
सपनों भरी,
झोपड़ी में गुज़रे वो पल,
अब शहर की चकाचौंध
में खोए
याद कर खूब रोये।

(3)

पुआल की
छत तले लेटे,
तारों को गिनते
रातें बीतीं,
गाँव की झोपड़ी की
वो शांति,
दिल को छूती,
अमिट छाप छोड़ी।

(4)

खेतों से
लौटते कदमों की
थकान,
झोपड़ी में मिली
सुकून की नींद,
बिताए दिन
वो सरल जीवन के,
फिर से
जीने की तमन्ना जगी।

(5)

स्मृतियों की धुंध
में छिपे,
वे दिन
हँसी के साथ गुज़रे,
अब सिर्फ़
यादों का साया,
लौट आएं,
बस यही दुआ।

(6)

समय की रेत से
फिसलती
वे घड़ियाँ
जो कभी न रुकती
बीते दिन की
मीठी यादें,
दिल में बसीं,
कभी न मिटती।

(7)

पुरानी
गलियों में खोए,
वे दिन बचपन के
सपनों जैसे,
अब दूर की
धुंधली तस्वीर,
फिर से
जीने की तलब जगी।

(8)

वक्त की
किताब के पन्ने,
वे बीते दिन
पीले हो चले,
फिर भी पढ़कर मुस्कुराते हैं,
यादों का ख़ज़ाना अमर रहे।

(9)

वादों की
डोर में बंधा,
समय की
नदी पार कर,
लौट कर
फिर आऊंगा,
तेरे आँगन में,
हर बार।

(10)

चल पड़ा पिता,
संग नन्हा हाथ,
धूप ढल गई-
पर नहीं थमा साथ
पगडंडी पर
छूटे दो साये,
एक में बचपन,
एक में विश्वास।

(11)

गगन को
चूम लेने की तमन्ना लिए
हौसलों के
पंख से
उड़ रहा था
राह में
एक हमसफर मिला
और
मंजिलें मिल गयी
एक सपना
जो बसा था
अपनी आंखों में
आज पूरा हुआ
तो लगा
सारी कायनात मिल गयी।

(12)

गगन पर
विभावरी आभा
तिमिर को
कुछ हद तक दूर करने का
करती है प्रयास
दीपक जलेगा
तभी पूर्ण अन्धकार
विलुप्त होगा,
कुछ पाने को
जलना ही पड़ता है।

(13)

गौरैया दिवस पर

(चिड़िया को लड़की का प्रतीक मानकर पढ़िए)

बहुत घुटन हो रही है
पिंजड़ा खोल दो
उड़ना चाहती है चिड़िया
जिंदगी की धूप में
जिंदगी पड़ना चाहती है
खुली हवा हो
अनंत आकाश हो
प्रकाश ही प्रकाश हो।

(14)

समंदर रेत का था
बड़े बड़े तैराक
आ गए
कुछ इधर गए
कुछ उधर गए
कुछ रेत में समा गए
नियति का
यही हिसाब है
सब कोई
बेहिसाब है।

(15)

रात्रि का होता अवसान
लुप्त होती दीप-शिखा
एक दूसरे के पूरक
एक दूसरे के सखा
अंधकार नहीं तो
रोशनी का
क्या औचित्य
दीप शिखा नहीं तो
तमस में
मार्ग कौन दिखाए
युवावस्था में प्रकाश साथ होता है,
बुढ़ापे में बुढ़ापा खुद बोझ ढोता है।

(16)

समंदर की तलहटी में बसी
सागर की आत्मा
धरातल पर आकर
किनारों से टकरा कर
गरजती है, बरसती है,
चिंघाढ़ चिंघाढ़ के रोती है,
अक्सर...
सीने में समेटे हुए दर्द
व्यक्त हो ही जाते हैं
किनारे ध्वस्त हो ही जाते हैं।

(17)

लॉक डाउन
अन लॉक हो गया
सीधा मतलब है
जेई विधि राखे राम
तेइ विधि रहिये
राम राम कहिये।

(18)

घने कोहरे से लिपटी जिंदगी को
कुछ मुस्कान दे सकूँ
सोच कर
चंद कदम आगे बढ़ाये
वेदना के स्वर को
नए आयाम दे सकूँ,
आदतों को बदलाव दे सकूँ,
चरैवेति चरैवेति कर्मज़
कर्मम् मम् धर्मम्।

(19)

रब्बर
कितना खिंचे
तो टूटता है
गर कोई जान ले तो
दुनिया से
बहुत सी दुर्घटनायें
घटित होने से बच जाएं।

(20)

झील के उस पार
जब
सूरज ढल जाता है
और अंधकार के कलूष में
पर्वत कांपने लगते हैं
और कांपने लगती है
मन में उठी आकांक्षाएं
बिल्कुल
कांपती लौ की तरह
न जाने कब बुझ जाए
और फिर घना अंधेरा छा जाए।

(21)

देख मैन होल
बड़े बड़े,
रो पड़े गड्ढे
छोटे छोटे,
सड़क के,
अपनी हैसियत पर।

(22)

घटाटोप से
विचलित व्योम
जब विह्वल हो
हुंकार भरता है,
उग्र सागर की लहरें
जब उद्वेलित हो
टंकार भरती है
रिश्ते जब
अंध गुफा में
बंद हो सिस्कार भरते हैं
तो
दुखी हो मन क्रंदन करता ही है।

(23)

स्कूली शिक्षा तक
पता नहीं था
हरिजन कौन
कौन बिरामण
जैसे ही कॉलेज गया
आरक्षण ने
सब सिखा दिया।

(24)

सम्बन्ध
तुम्हारा हमारा कुछ है,
बचपन से तो देखा है
हमने तुम्हे और तुमने हमें
सीधा सा सरल सा
रिश्ता हुआ करता था,
उम्र के साथ
पेचीदगियां कहाँ से आ गयी
कैसे यह सम्बन्ध जटिल हो गए
न तुम समझा पा रहे,
न मैं समझ पा रहा
आओ, फिर से वही
गाँव वाला रिश्ता
स्थापित करें।

(25)

दूर दूर तक
पसरा सन्नाटा
रेत पर
चांदनी भी बिखरी हुई
सन्नाटे में
लहरों की गड़गड़ाहट
शांत जीवन में
होता है परिवर्तन
ऐसे ही
आहिस्ता आहिस्ता।

(26)

अंधेरों के आगे
उजाले बहुत हैं
ऐ मेरे हमदम
संभल संभल चल
न जाने कितना दौड़ना पड़े
सुबह की आस में,
जिंदगी तो वफ़ा करती है
पर बेवफाई तो
खुद ही जफ़ा करती है
आसमाँ कब झुकेगा
कब न जाने तूफां रुकेगा,
जिजीविषा जिंदा रख चल
न तू बदल न जहां बदल।

(27)

ईद की करूँ
रामारामी,
दे तू दिवाली की
मुबारक
चाँद की चांदनी
दोनों में,
दोनों त्योहार
बहुत मनभावक।

(28)

फुटपाथ पर
नंगा बिलखता
रोता
समाजवाद,
अट्टालिकाओं में
वैभव ग्रस्त
अट्टहास करता
पूंजीवाद,
अच्छे दिन कैसे आयें?

(29)

किनारे
नाव-मछुआरे
और
लाचार,
समंदर में
उमड़-घुमड़ तूफान
और
ज्वार
क्षुधा कैसे बुझे?

(30)

ऊपर
त्रस्त दलित बस्ती
और
खामोश धुआं,
नीचे
जमींदार की हवेली
और
पानी का कुआँ।

(31)

गरमी की दोपहरी
अलसाई सी
श्वेद कण
माथे से निकल
चेहरे को धोते हुए
अंतर्मन की उष्णता को
श्रम हीन करते हैं
और
पूरा जीवन उफन कर
पिघलता हुआ
बह जाने को आतुर।

(32)

एकाकी वेदना का
बोध लिए
नागफनी के जंगलों में
क्रोध लिए,
स्वयं को उलझाती
अनबुझी पहेलियों को
सुलझाती
जीवन गति की अतृप्त पिपासा
जिजीविषा के अंतिम प्रहार पर
संयमित होगी मेरी अभिलाषा।

(33)

अनबुझी पहेलियों सी
अन्तः भावों को उलझाती,
जीवन के गीत अगीत से गाती
आकांक्षाओं से भी बड़ी
क्षमताओं से लड़ी
कभी शांत सरिता सी
मन को अकुलाती
कभी नभ पर ऊँची
उड़ान की इच्छुक
मुक्त खग सी मंडराती
बन्धनों में अवरुद्ध अतृप्त पिपासा
संकुचित संचयित हो मेरी प्रत्याशा।

(34)

लहू लहू से जुड़ता है
तो वह भी
अपनी जात देख कर
वाह रे कुदरत
तेरा करिश्मा
लहू का रंग एक है
पर जात अनेक है।
संप्रदायवाद
ए पॉजिटिव बी नेगेटिव ही है
कभी नहीं मिल सकता।

(35)

तपिश
आतप की हो
या हो
अंतस कुंठा की
डाह तो
दोनों में होती है,
दोनों
बिन तेल-बाती
जलते हैं,
और
जलाते हैं
पूरे तन को
धरा को
गगन को।

(36)

मेरी कुंठाएं
समस्याओं के टीलों से
फिसलती
अंध कूप में समां रही हैं,
धरातल खिसक कर
आसमान की लम्बाई
नाप रहा है,
दूर
सुदूर बैठा
एक कौवा
मेरी विवशता
को भांप रहा है।

(37)

उदास शहर की
आंखों में क्यों
खामोशी पसरी है
जनता सहमी
सड़कें डरी डरी है
खुशनुमा माहौल
की महक पर पहरा है।

(38)

नीरवता स्तब्ध है खड़ी
चुंधियायी आंखों में
दहशत आंखें मिला रही हैं
सत्ता की टकराहट में
बेचैन सिसकियां चिल्ला रही हैं
दिल पर जख्म गहरा है।

(39)

घटाटोप आकाश
भयभीत करती
बिजली की गर्जना
वायुवेग और चक्रवात
पक्षियों के नीड़
ध्वस्त
एक कोने में पड़ी है
भींगी सहमी
दुबकी सी चिड़िया।
सुबह का इंतज़ार है
उजली भोर होगी
बस थोड़ा सा और इंतज़ार है।

(40)

मुट्ठी भर धूप
जो उछाल कर अंधियारे में फेंकी
झिलमिलाते तारे गगन पर
मुस्कराने लगे
चाँद की चाँदनी में सद्यस्नात
अवसादित अंतस
खिल खिल गया है
धूप की अहमियत
मन की रोशनी
सहेज कर रखी है
भावनाओं से वातावरण
हिल मिल गया है।

(41)

सुन्दर पाखियों का चहचहाना
कितना सुन्दर लगता है,
कौन जानता है
उनके अन्दर की पीड़ा
पिंजड़ों से नहीं
खुले से डर लगता है
अक्सर...
कैद परिंदे की तो दयनीयता तय है,
उन्मुक्त गगन में उड़ने वाले
तुझे शिकारी का हर वक्त भय है।

(42)

नागफनी के जंगलों में खिला
गुलमोहर
खुशबू के तलबगार को
लालायित
ता-उम्र ढूँढ़ता रह जाता है,
अक्सर...
मेहरबान नहीं मिलते उसे
और सत्य है
जिंदगी इसी तरह
असुवासित होती है।

(43)

रात
फलक पर
नज़र गड़ाए
जागता रहा
तारों का टिमटिमाना
देखता रहा
दोनों उदास थे,
गम के आस पास थे
दोनों को ही
एक प्रकाश पुंज की
तलाश थी,
शक्ति चाहिए थी,
उन्हें टिमटिमाने के लिए
मुझे मन शांति से जीवन ज्योत
जगमगाने के लिए।

(44)

राग द्वेष के
ये असुर,
छलते दिन औ रात
तू कर ले
मन संतुलित,
बन जाएगी बात
जीवन नैया
खींचता,
मिल जुल मिल बांट
ओ सह धर्मिणी तू सदा,
खाई रहती पाट।

(45)

समय तो
निरंतर गतिशील है
यह है मेरा जीवन
असमंजस क्यूँ
काल के अंतराल में
बदलाव नहीं होते
भविष्य निर्मित करने को
उत्तरों में ठहराव नहीं होते
उत्तर तो हमें ही देना है
ठहरे वक्त को
नए आयाम की
परिधियों में लेना है।

(46)

चिंगारियां
स्फुरित होती हैं
अंतस में,
कुत्षित भावनाएं
दहकाने को,
निर्झरिणी
प्रपतित
हो रही हो
ठंडक
पहुँचाने को।

(47)

चाँद को भर लूँ
हथेलियों में
ख्वाइशें हज़ार थी
गर्द ऐसी उड़ी की
चाँद
न जाने किधर जा छुपा
अरमान, ख्वाइशें, आरजुएं लिए
हथेलियां सुर्ख होकर रह गई
और जिजीविषा
दर्द में खोकर रह गई।

(48)

रेत पर उधृत आकृति
मन तो मोह सकती है
पर जीवंतता नहीं ला सकती
जलधि की एक
उन्मुक्त लहर आएगी
और
अपने आगोश में समेट ले जाएगी
रह जाएंगे बस
अधमिटे निशान
तू अपनी हकीकत पहचान।

(49)

अमावस्या है
गहन अँधियारा है,
सांध्यकाल
तिमिर में विलुप्त हुआ चाहता है,
यह तिमिर अब नहीं छटेगा,
नयी सुबह होगी
नए परिधान से सज्जित
नूतन विचार ही अब
तिमिर हटायेंगे
जीवन संजीवनी ले आयेंगे।

(50)

पतझड़ में
झर झर झरते पत्ते
बिखर जाते हैं
यहाँ वहाँ,
सम्बन्ध
जीवन आधार से
बिखरते हों
झरते हों
जैसे।

(51)

जिंदगी
उदास रही उम्र भर,
तपती रेत पर
पानी की चंद बूँदें
गिरती
उड़ जाती
जलता ही रहा
उम्र भर।

(52)

फलाच्छादित वृक्ष
और
सु-स्वभाव मानव
दोनों का उद्भव परिणति
सर्वदा जड़ों की ओर होती है
जड़ें मजबूत हों तो
मन शांत होता ही होता है।
सिंचित कर नेह नीर से
पल्लवित कर चित्त को पर पीर से।

(53)

दर्पण के चटखने से
अक्स बिखर जाते हैं
पर
जब
जिंदगी चटखती है
तब
अस्तित्व ही
बिखर जाता है।

(54)

उस दिन
चाँद को हथेलियों से छुआ था
जब पानी पर
तैर रहा था चाँद
हथेलियों में बैठी ठंडक
आज भी वैसी ही है,
कलेजे तक जाती हुई
जहां सारे ज़माने के घाव
सुरक्षित हैं,
कभी कभार
एक टीस उठती है
और चाँदनी
मर्माहत हृदय को
शीतल करती है।

(55)

दूध की अहमियत को जानिए
सांपों को पिलाया नहीं जाता
अश्कों की कीमत को पहचानिए
यूँ ही बहाया नहीं जाता
दर्द कितना भी गहरा हो
आँखों में कभी न आना चाहिए
वो इंसान भी इंसान क्या
जिससे मुस्कराया नहीं जाता।

(56)

लकीरें
कहीं भी हों
कुछ कहती हैं
मस्तक की लकीरें
वेदना और अवसाद दर्शाती हैं
हाथ की लकीरें भरमाती हैं
सुने कागज़ पर खिंची लकीरें
एक इतिहास रचाती हैं
हृदय पर अगर पड़ जाएँ लकीरें
दर्द का आभास कराती हैं
कुंठित मन उन्मन हो तो
यही लकीरें मार्ग बताती हैं।

(57)

आनंद की अनुपस्थिति
दुःख है,
शाश्वत प्रेम की अनुपस्थिति
मोह है,
प्रकाश की अनुपस्थिति
अंधकार है
आओ एक दीप जलाएं
अंधकार को दूर भगाएं।

(58)

विचारों के
महल
रेत की
नींव पर
ढह जाते हैं
रह जाती है
बस सपनों में
बसी आशाएं।

(59)

सच्चाई यही है
कि
सच्चाई
कहीं नहीं है,
प्यार हर जगह है
पर
परखने को निगाहें
कहीं नहीं है,
उतर आ
मेरी जीवन बगिया में
ऐ मेरे वनमाली,
खुशबुएँ
हर जगह हैं
पर
पहचानने वाला
कोई नहीं है।

(60)

हिमगिरि के शिखर पर
धवलता
सूरज की किरणें
चमकदार
और नीचे
सन्नाटा
नीरवता
भयाक्रांत
भारत मौन
तिमिर ढलेगा
दीप जलेगा।

(61)

समंदर की अगाध जल राशि में भी
छोटी सी लोहे की नाव
डूबती नहीं
डूबती तब है
जब
नाव में छेद हो
और जल नाव में प्रवेश करे
दुख का अगाध सागर है
मन रूपी नाव में छेद मत होने दो
दुख कभी दुख नहीं देगा
और न ही मन डूबेगा।

(62)

पर्वत शिखर
मेघ मंडल से आच्छादित
खो सा जाता है,
पिघलती हिमराशि
हृदय में उतर जाती है,
एक पीर
ठंडक पड़ जाती है,
प्रकृति का यही है नियम।

(63)

सोचता हूँ
सागर कैसे सह लेता है
दर्द, तूफान, ज्वार, भाटा
सब कुछ
क्यों उसमें कभी कोई
बाढ़ नहीं आती
क्यों कभी वह सीमाओं का
अतिक्रमण नहीं करता
क्या यही मनुजता है
क्या यही सहनशीलता है।

(64)

रात भर दीपक
तड़पता रहा,
उजाले की आस में
जलता रहा
उसके दर्द को किसने देखा
उसके मर्म को किसने समझा
भोर होगी
रवि रश्मियाँ
बिखरित होंगी
अहमियत दीपक की
विचलित होगी,
अंधकार
कितना भी प्रगाढ़ हो,
विवशता अगाध हो,
दिवाकर के आगमन से
लुप्त हो जाती है तमसता
ब्रह्म ज्ञान का ज्योति पुंज
निस्बाध
आलोकित हो ही जाता है।

(65)

मौत चौखट पर
लाख माथा पीट ले
पर जब तक जिंदगी अंदर है
मौत आ नहीं सकती
खुश रहता हूँ इसलिए
जिंदगी जा नहीं सकती।

(66)

लक्ष्य छोटा हो जब
निष्कर्ष बड़ा हो नहीं सकता
सोच छोटी हो जब
लक्ष्य बड़ा निर्धारित हो नहीं सकता
बिन लक्ष्य के उत्कर्ष हो नहीं सकता
अंतश्चेतना को जागृत करो
तत्वमसि का आह्वान कर
कलुषित व्योम को परिमार्जित कर
हेम शंखनाद कर
भारत नव निर्माण करो।

(67)

लकीरें सचमुच
दर्द देती हैं
खुशियाँ देती हैं
कुछ ये देती हैं कुछ वो देती हैं
लकीरें सच ही तो कहती हैं
खींच जाएं दिल पर
रिश्तों के टूटने का
अहसास कराती हैं
अनुभव की लकीरें
दर्द भरी होती हैं
चूती हैं आंखों से
दिखती हैं चेहरे पर
ये लकीरें खुद को टूटने का
हिसाब बताती हैं।

(68)

पत्नी
जी हाँ अर्धांगनी
पूछ रही साजन से
कोहरे की नींव पर खोखली इमारत है
गृहस्थी शरारत नहीं इबादत है
पत्नी हूँ कोई गैर नहीं
समस्याएं मुख पर तैर रहीं
अब चुप न रहो कुछ तो बोलो
सजन हृदय की अर्गलायें खोलो
सजन रे झूठ मत बोलो।

(69)

इस देश की फिजां
मजहबी हो रही है
असहिष्णुता
किस तरफ है सोचिये
हज़ारों साल दबते रहे
जरा सा प्रतिवाद किया
तो हम असहिष्णु हो गए
दबते रहना ही नियति है क्या हमारी।

(70)

मैंने
समंदर को रौंद डाला
पैरों तले
यह सोच कर की
विगत स्मृतियाँ
कर देंगी दूर
एकाकीपन को
पर क्या
जल की दो चार बूँदें
धधकते मरुस्थल की रेत में
ठंडक पहुंचा सकी है।

(71)

समंदर की
हथेली पर उकेरी थी
मैने
तस्वीर आपकी,
झोंका लहरों का
एक
ऐसा आया
मिटा दिया सब कुछ
बाकी न रही अब यादें भी
ज्यों भुलाये थे तूने वादे भी।

(72)

मेघ राशि का नाम है
जो पर्वत शिखर पर
समर्पित हो
टकरा टकरा
बरस बरस जाती है
और शीतल कर जाती है
उष्ण मन की तपिश को
जिनके दरस को
अंखियां तरस तरस जाती हैं।

(73)

अहसास
बादलों में पिस कर
दर्द की बारिस से
जब अंतस की जमीन पर
टपकते हैं
तब
नैन पहाड़ी नाले से
उफनते
सैलाब से बह निकलते हैं
चाहिए तब ढांढ़स प्यार छुवन
रह जाती है तपिश अगन जलन।

(74)

आसमान
पिघलता रहा
बहिर्मुखी
बादलों की
कलुषता से घिरा
चपला की चमक में
बूँद-बूँद कराह कर
रिसता रहा
कोने में दुबका
निरीह पाखी
सब कुछ शांत होने के इंतज़ार में।

(75)

दौड़ती-हांफती
जिंदगी कहीं दम तोड़ न दे,
सन्नाटा
अचूक लक्ष्य भेद
मरघट से जोड़ न दे
चरमराती जिजीविषा
बस चरैवेति चरैवेति।

(76)

संकीर्णता
विचार की, आचार की,
मानसिकता की, व्यवहारिता की,
ब्याल की बाम्बी जैसी होती है
मुक्त गगन में
विचरने वाला पाखी
एक सीधी लकीर पर
कभी उड़ नहीं सकता
बड़े सपने लेकर
संकीर्ण पथ पर गया मानव
कभी मुड़ नहीं सकता
दोनों की एक गति है
दोनों पछताने के अलावा
कुछ कर नहीं सकते।

(77)

ओढ़ कर चाँदनी
सो रही थी जिंदगी
निश्चिंत सी,
एक हलचल हुई
अर्धरात्रि में,
आँखें खुलीं तो
सागर लहरें ले रही थी हिचकोले,
मन था अस्थिर
और सूरज धीरे से कुछ बोल गया
अर्गलायें हृदय की खोल गया।

(78)

बूँद-बूँद सागर
सतत प्रयत्न
डूबता तैरता तिनका
अंततः किनारे पर पहुँच ही जाता
ऐ मन धीर धरो
लक्ष्य निकट है।

(79)

कोहरे के दलदल
पर बनी इमारत
न जाने कब ढह जाएगी
सूरज उगेगा
उष्णता आएगी
धुंध छटेगी
और एक हसीन सुबह रह जायेगी
उस हसीन सुबह का इंतज़ार है
बार बार अंतस की यही पुकार है।

(80)

तन में हुई हरकत
जुगनुओं ने सम्हाली रोशनियाँ
इकट्ठा कर शमाओं को
हम सूरज एक बनायेंगे
जीवन की अंधियारी रात में
माला दीयों की जला
बुझती आँखों की चमक
हर जिंदगी में हम लायेंगे।

(81)

समंदर की
लहरों से
टकरा कर
मेरे सपनों का महल
टूट गया,
शायद रेतीली नींव पर
विचारों का
यही हश्र होता है।

(82)

नयन कक्ष पर
पलकों का जो पर्दा है
छिपा रखा है इसने
भावनाओं का अद्भुत खजाना
भावनायें
कोई जिसे चुरा नहीं सकता
भावनायें
जिसे छूने का प्रयत्न
व्यर्थ होता है
झट से
ये भावनायें
ये अहसास
पलकों में
पलक झपकते ही
समाहित हो जाते हैं
और फिर घुटन
अवसाद तड़पाते हैं।

(83)

ऊंची
खूब ऊंची
पर्वत माला के
दूसरी पार
एक सभ्यता
और पल रही है
अंधकार दूर करने
जहाँ जुगनू की भीड़
नहीं है
प्रेम की बाती जल रही है।

(84)

अनबुझी पहेलियों सी
हृदय भावों को बिखेरती
जीवन को करती परिभाषित
अतृप्त पिपासा
आकांक्षाओं से बड़ी
क्षमता से लड़ती
कभी शांत सरिता सी
मन को अकुलाती
मुक्त खग की
नभ पर ऊँची उड़ान सी
अतृप्त पिपासा।

(85)

एकाकी वेदना का अहसास लिए
नागफनी के जंगलों में
उलझती गुम होती
अनबुझी पहेलियों को
सुलझाती
अतृप्त पिपासा।

(86)

कब क्षितिज पर
लालिमा का अंगार होगा
कब वसुंधरा पर
पोषित हरित श्रृंगार होगा
कब कम होगी अंतस की वेदना
मनुज को मनुज से प्यार होगा।

(87)

घटायें काली छा रही हैं
मार्ग है दुर्गम
लौ दीपक की टिमटिमा रही हैं
भूलभुलैया में गुम
हृदय वर्जनाएं चरमरा रही हैं।

(88)

जीवन के अंतराल में
कुछ क्षण ऐसे भी आते हैं
समूचे वृत को मर्माहत कर जाते हैं
निरंतर गतिशील समय
भविष्य को निर्धारित कर जाता है
पता नहीं
कब क्षितिज पर
लालिमा का अंगार होगा
कब पुनः सुखमय संसार होगा।

(89)

समग्रता
आत्मा से
परमात्मा के मिलन की
छलकते अश्रुजल से
छलकती मनोदशा
वेदना अतिप्रभावित और
छलकती देह दुर्दशा
शून्य से प्रारंभ यात्रा
का शून्य में समावेश
धीर गंभीर हृदय में
उठता पनपता आवेश
क्या यह ही विश्रांति है?
क्या यह ही शांति है?

(90)

उस दिन
चाँद को हथेलियों से छुआ था
जब पानी पर तैर रहा था चाँद
हथेलियों में बैठी ठंडक
आज भी वैसी ही है,
कलेजे तक जाती हुई
जहां सारे ज़माने के घाव
सुरक्षित हैं,
कभी कभार एक टीस उठती है
और चाँदनी मर्माहत हृदय को
शीतल करती है।

(91)

प्रसन्नता
सापेक्ष है
संतुष्टि की,
अर्थ
कभी पूजित नहीं होता
न तो इस युग में न किसी युग में
व्यक्ति आकांक्षा एवं कामना का
मूर्त रूप है,
सुखवांचा,
यशोकांक्षा
परन्तु रहती है सर्वोपरि
जिजीविषा की आकांक्षा
जानते हुए कि
है मृत्यु तो निश्चित।

(92)

बस उस सुबह का इंतज़ार है
जहाँ उदित अरुणित भुवन भास्कर है
और उनको नमस्कार है।

(93)

गगन
अंगार बरसा रहा है
धरा भी
तमतमा रही है
पंछी
घोसलों में शरणागत हैं
इस गरम हवा में
घर ही
सबसे सही ठिकाना है
अगर आपको
इस अनल से बचाना है।

(94)

रेत पर उकेरी गयी
आकृतियों में
स्थायित्व नहीं होता
एक लहर समंदर की
सब कुछ मिटा जाती है,
समय की तीखी मार
समूची यादों को उड़ा ले जाती है
रह जाता है फिर से एक
कोरा पन्ना।

(95)

जिंदगी गयी बिखर,
न इधर
न उधर
न कोई खबर,
कोमल हथेलियों पर
ज्यूँ फफोलों का असर
जिंदगी गयी बिखर,
फिर सिमट कर
छलनी दिल को कर
फिर गयी बिखर,
उष्णता भावों की महसूस कर
अहसास, जज्बात, प्रखर प्रखर प्रखर।

(96)

अलमारी में रखी
पुरानी किताब सा हूँ मैं
शो केस में
सजा कर सब रखते हैं
पर पढ़ना
कोई नहीं चाहता
बस डर है
कब रद्दी के भाव
बिक जाऊँ।

(97)

सल्तनत
चाहे देश की हो
या
संस्था पर स्थापित,
छिनने का भय
सब भय दूर कर देता है
आदमी इंसान नहीं रहता
दरिंदा बन जाता है
अपनी औकात पर उतर आता है।

(98)

खूनी है सड़कें
गलियारे डरे डरे
पगडंडियां लहराती पहाड़ पर बैठे
महामानव के चरण चूम रही
निःशब्द नीरव घाटी
ॐ नाद से है गूँज रही
जटाजूट शिव तांडव कर रहा
दीन हीन मानव गुहार कर रहा
शांतम शांतम शांतम
त्र्यम्बंकम प्रलयंकर शांतम।

(99)

सूरज से छीन कर
लाया था
एक मुठ्ठी धूप
और
चला रोशन करने दुनिया
चारों सिम्त अंधकार ही अंधकार
अंधकार ढेर सारा
और धूप
बस एक मुठ्ठी।

(100)

गहन काली अंधियारी रात
निस्तब्ध नीरव शांति
अंतस उद्विग्न
जैसे
अवसाद ग्रसित
सागर से उफनता चक्रवात
तन शिथिल
मन विह्वल
रात की खामोशी
करना चाहता हूँ आत्मसात
बस अब
सम्पूर्ण निद्रा लेना चाहता हूँ
शांति का वरण करना चाहता हूँ।

(101)

इस शहर की
हवा जहरीली है
कलियों को नहीं फबती,
विषैले सांप खुले घूम रहे हैं
कर दो एलान
पलायन कर जाएँ
पंखुड़ियां तक नोच खायेंगे
हम तुम क्या
कुछ कर पाएंगे???

(102)

मैं ठूंठ हूँ बरगद हूँ या बबूल हूँ
कोई फर्क नहीं पड़ता
फल देना मेरी प्रवृत्ति नहीं
मैं कटु नीम हूँ
क्योंकि मेरे होने से ही
उनमें मधुरिमा है
मैं अनगढ़ हूँ यही मेरी पहचान,
मैं जैसा हूँ,
वैसा सम्यक हूँ, बस प्रार्थना है
जैसा हूँ वैसा ही बना रहूं
मुझे मेरी गंगा में बहना है
मुक्त जीवन का अनवरत सार सहना है।

(103)

उदास सा
खामोश बैठा है
बारिश का पानी आज कल,
न तो रहीं वे कागज़ की कश्तियाँ
न ही रहे वो बच्चे अब यहाँ,
हर हाथ में मोबाइल
और बिखरा हुआ दिखे बचपन
शायद ये कागज़ की नाँव
सो गयी है मोबाइल की छाँव
ये कागज़ की कश्ती
ये बारिश का पानी
बस एक गुनगुनाने भर को
गज़ल बन के रह गया
आज का बचपन
वक्त से पहले
भौतिकता में ढह गया।

(104)

कितने भाव उकेरोगे
सूखी पड़ी रेत पर
गर्म हवा का झोंका आयेगा
सब कुछ ले उड़ेगा
नामोनिशान भी न बचेगा
रेगिस्तान में
और
क्या है
उड़ती रेत और गर्म हवा के झोंकों के सिवा
जिंदगी भर
चाँद को हथेली पर सजाया
परन्तु उम्र के इस पड़ाव पर
लाल सूरज जमीन पर लेटा है
कुछ कच्ची पक्की यादें हैं
जो मृगमरीचिका सी
एक मात्र जीने का कारण बनी हुई हैं
गर्म हवा में, उड़ती रेत में
अपना बचपन ढूँढ़ रहा हूँ।

(105)

वह जो बंद कमरा है
हमारे घर का
उस कोने में
उसमें
एक हारमोनियम रखा है
सफ़ेद चादर से ढका था
समय की धूल ने
चादर को बदरंग कर दिया
जैसे मेरी ज़िन्दगी को किया
अब न कोई सुर
न कोई ताल
हारमोनियम भी मेरे जैसे
बेसुरा हो गया है।

(106)

कभी आपने समंदर के तट पर
रेत की आकृतियों को देखा है
कितनी सजीव
कितनी बोलती
मानो उठकर रेत के बने घर में जा बसेगी
समंदर की लहरें
धीरे धीरे आकृतियों को
अपने में समेट लेती है
और रह जाता है
एक अजीब सा मौन
एक पहचान
किसी कलाकार ने
यहाँ एक आकृति उकेरी थी
पुनः अंतराल में वह चिन्ह भी
लुप्त हो जाता है;
अगर आकृति अविस्मरणीय हो
तो यादें रह जाती हैं।
एक रेत की आकृति हम
किसी कलाकार की रचना
निष्कर्ष बस यादें ही रह जाती हैं।

(107)

लग रहा है
उम्र की आखरी दहलीज पर
कोई वृद्ध
जिंदगी का रस सूख जाने पर
अंतिम पड़ाव ढूंढ़ रहा हो,
थक गया हो चल चल कर
जिंदगी के शूल झेल झेल कर
उम्र के अनुभव
सूखे पत्तों से बिखर गए हों
कोई उसे रौंदता जा रहा हो
बस एक छानी सी रौशनी
जिंदगी खींचें जा रही हो।

(108)

खिड़कियाँ
एक प्रतिबन्ध होती हैं
खुल जाती ही हैं
कितनी भी मजबूती से बंद करो,
दीवार की तरह
कदापि नहीं हो सकती
आत्मसात कर लेती हैं
समस्त प्रदूषण
समस्त कल्मष
समस्त वर्जनाएं
देखती रहती हैं
खुली आँखों से
आते जाते मार्ग को,
मौन, अति मौन।

(109)

आशाओं उम्मीदों की डोर में
झूलता जीवन
अनुभव की कड़वी चासनी में
सना जीवन
मुट्ठी में भरी रेत सा
फिसलता जीवन
जीवन चाहे नए आयाम
जीवन चाहे जीना सकाम
हवा के बर्फीले झोंकों को
छेदों भरी छलनी से रोका नहीं जा सकता
जीवन का यही होता है अंजाम
कंटक भरे मार्ग को
यूँ ही नहीं किया जा सकता पार
एक हौसला, आत्मबल, साहस
एक जज्बा होना चाहिए
राह के शूल भी
बन जायेंगे फूल
परिस्थितियाँ होंगी
अनुकूल।

(110)

क्षितिज पर मिलन
कल से कल का हो रहा,
वर्तमान तो देखो
धरा पर चित पड़ा रो रहा।

(111)

चाँद को भर लूँ हथेलियों में
ख्वाइशें हज़ार थी
गर्द ऐसी उड़ी की
चाँद
न जाने किधर जा छुपा
अरमान,
ख्वाइशें,
आरजुएं लिए
हथेलियां सुर्ख होकर रह गई
और जिजीविषा
दर्द में खोकर रह गई।

(112)

एक छोटा सा रौशन दिया
अँधेरे कमरे में भर देता है उजास
और सूर्य की तीव्र किरणें
खिड़कियों की झिर्रियों से आती हैं
एक रेखा सी बस खिंच जाती है
नहीं होता कमरे में प्रकाश
एक समर्पण है पूर्णता का
एक संकुचन की परिणिति
दोनों ही अवस्था में
अस्तित्व की होती अनुभूति
विचारों का खुलापन छोटे से दीए की भांति है
संकीर्णता कभी भी पूर्ण नहीं हो सकती है
टप टप करती छत
या टपकते बेबसी के आंसू
संघर्षशीलता की कमजोर कड़ी होते हैं
जो एक सीमित दायरे में ही होते हैं
नज़रंदाज़ कर इनको
अनवरत बढ़े चलो बढ़े चलो।

(113)

जीवन
एक सत्य
सारगर्भित तत्व
प्राज्ञत्व
व्रीडीत व्यक्तित्व
अहंकार स्थापित्य
अति संवेदनशील
आशायें आच्छादित
वर्जनाएं अपेक्षित
अंतर्मन एवं अहम् का द्वन्द
लक्षित सदृश मकरंद
कभी सुवासित
तो कभी अवसादित
निष्कर्ष
जीवन
कभी द्युत्मान सबेरा
कभी तमस निशा।

(114)

मैंने जो सपने देखे थे
वे मेरे अपने तो न थे
उधार के सपने
जो वर्षों पहले टूट गए
किसी और की
आँखों में बस गए
आज भी पलकों पर
तैरते विचरते हैं
कभी रुलाते कभी
कभी निहुरते हैं,
अतीत की बेला में
स्वर्णिम काल की कल्पना में
आज भी सिहर उठता हूँ,
जीवेम शरदः शतं
आकाँक्षाओं को सिमर उठता हूँ।

(115)

क्यूँ
कभी मन उद्विग्न होता है
क्यों कभी जीवन
भिन्न होता है
आस्थाएं
समूची हिल सी जाती है
अवित्ति जैसे
प्रपन्न हो
मुस्कराती है।

(116)

पिता पिता होता है,
हर हाल में
समय अंतराल में
उन्नति की चाह में
अपने सुख की नहीं वरन
संतति सुख हेतु
अपने आराध्य को अर्घ्य देता है
सर्वस्व न्योछावर कर देता है
दुखों का वरण कर
चाँद हथेली पर लिए
चल देता है।

(117)

शाद्वल
दूर दूर तक
रेगिस्तान में नज़रें दौड़ती हैं
और खोजती है जल की बूंदों को,
मृग मरीचिका सी,
पा जाये अगर शाद्वल कहीं तो
स्वर्ग सी अनुभूति होती है।

(118)

माना की
ज़ख्म बहुत गहरे हैं
घायल वतन है,
परेशान हर इंसान है
हालात देख देख खुद भगवान् हैरान है
फिर भी इतनी बेसब्री अच्छी नहीं होती।

(119)

आओ खूब ढोल बजाएं
खुशियाँ मनाएं
सांध्य बेला है,
दिवस अवसान का समय है
महा प्रयाण पर्व है
अर्घ्य ले पूज लें
नव भोर होगी
नव जीवन प्रारंभ होगा
व्योम में जलद का नाद होगा
सिंचित जीवन का नवाल्म्ब होगा।

(120)

तपती धरती पर
सुख की
दो बूंदें तो
झट से उड़ जाती हैं,
दुःख के तो जाते-जाते ही जाते हैं निशाँ,
दिल कहे वह है परेशां-परेशां।

(121)

खुद के
लगाये फूल ही
बहुत थे घायल करने को
वो हम हैं की
झूठ मूठ ही
कांटों को दोष देते रहे।

(122)

धरती
बरसाने लगी
अंगारे
रोते बादल भी
धरा के कोप को
न कर सके
शांत
धरती का कोई प्यारा
छिन गया था।

(123)

सागर की
लहरें
निचुड़ जाती हैं
चन्द्रमा के
छिप जाने से
और
शरीर
निर्जीव हो जाता है
स्व-रक्त
के छिन जाने से।

(124)

समंदर सी आँखें
रेगिस्तान बन जाती है
जब
पहले पति
अब बेटा
चला जाता है
वह भी दोनों
अकाल।

(125)

खिलता गुलाब
जब टूटता है
कांटें तो चुभोता है,
पर कहाँ?
प्रिय कोई
टूटता है
तो कांटें चुभोता है
पर कहाँ?

(126)

तपती धरा
व्याकुल निरखती गगन को,
कब तृष्णा
करने को पूरित
गरजेंगे बादल
कब
वर्षों से
दहकता अंतस
शांत होगा।

(127)

पर्वत के
उस ओर
शायद चाँद रहता है
इसीलिए हर रात
झांकता है
उचक कर।
चलो आसमान से
भी ऊंचा उठ जाएं
मुठ्ठी में कर लें
चाँद को ढूंढ़।

(128)

एक शोला
उठता है अंधकार से
लुप्त हो जाता है अंधकार में
बस बीच में
थोड़े समय के लिए
टिमटिमाता है
जिंदगी की तरह।

(129)

पूनम का चाँद
और
उठता ज्वार
समंदर ही नहीं
अंतस तक को
झकझोर देता है
किनारे पर
पांव तले की रेत
खिसकती चली जाती है।
मानो
जिंदगी ढेर हो जाती है।

(130)

वर्ष दर वर्ष
बढ़ रहा
रावण का आकार
घट रहा
मानवीय संस्कार
यह भीड़भाड़
यह शोरगुल
यह आर्तनाद यह पुकार
कब छोटा होगा रावण
और
कब होगा उसका संहार?

(131)

मजमून, दीपक, चिराग, दीया
एक त्वरित क्षणिका
दीया रात भर जलता रहा
रोशनी की तलाश में
कुछ मुझमें झांक देखा
कुछ बदरी भरे आकाश में
अंधेरा इधर भी था
अंधेरा उधर भी था
सब खो चुका था
गुम हुए उजास में
चिरागों की इंतेहा यही होती है
हवा चलती है और लौ खोती है
बुझती है टिमटिमाते प्रकाश में।

(132)

अगाध जल राशि के सागर में भी
लौह निर्मित नैया
डूबती नहीं,
डूबती है तब
जब जल नैया में प्रवेश करता है
दुःख का सागर विराट यह जग
दुःख को निज में प्रवेश करो मत।

(133)

सूरज का जमीं पर
सागर की लहरों से मिलना
आसमान को लाल कर देता है
मिलन तो सदा
आल्हादित करता ही है
मिलते रहो
दोस्तों से
अपनों से
आनंद की लाली
चेहरे पर झलकेगी
उदासियाँ
कोसों दूर रहेगी।

(134)

कितना लम्हा
कितने पल
अक्षुण्ण
प्रतिपल
अतीत की डगरिया
अंतर्मन की पगडण्डियाँ
नभ को छू लेने की आशा
मेरा विश्वास
मेरी प्रत्याशा
सब तुम्हारा है,
ऐ मेरे चाँद
यूँ ही खिलता रह
तिमिर को दूर कर
यूँ ही हँसता रह।

(135)

फिर भी
अकर्मणिय मन ने
कुछ सोचा-कुछ देखा
अंगारों से भरे आसमान से
चू रहा दर्द बन अग्निखंड
और धक् से उड़ जाती संवेदना,
गरम सहरा की रेत पर
गिरते ही उड़ती
आकांक्षा, तृष्णा और अंतस की वेदना,
मानव का अस्तित्व क्या है
बस एक सोच
जिसमें जीवन भर घिरा रहता है
शून्य से आरंभ होता जीवन
शून्य पर ही शेष होता है,
उत्कृष्टता के मापदंड
उत्श्रृंखल अभिमाद
उबलते दुग्ध पर
जलराशि सा शांति प्रदाता
स्नेहसिक्त वात्सल्य
भी खो रहा ये काल
ये जीवन।

(136)

अंतस की विकृत अवस्था
चरमोत्कर्ष पर स्थित अशांति
विह्वल मनोभावना
अंतर्द्वंद्व के उत्पीड़ित
भ्रमित, अकिंचित, अनिर्णीत
क्षणों का समायोजन
एक दीर्घ विक्रय योग्य स्वप्न
रहस्यवाद की कथा का गुंजार
सत्य असत्य में डोलता मानसिक उद्गार
क्या करूँ क्या न करूँ
सोचने में असमर्थ
एक मार्ग दर्शक का इंतज़ार।

(137)

स्वप्न मनोहारी
आत्मसुधा वर्धक फलहारी
उधार के स्वप्न, बेबसी लाचारी
उत्पीड़न की उत्कंठा
मन कुंठित, निश्चित, सर्व विदित
लक्ष्य निर्धारित
देख अन्य का प्रगति पथ
न निर्धारित कर मार्ग
अतिशियोक्ति नहीं, यथार्थ
पा सकता नहीं कभी लक्ष्य
ले उधार के सपन,
उत्कंठित मन,
उद्वेलित तन,
कर शांत, प्रशांत अंतर्मन।

(138)

दशा
अंतर्मन की
आंतरिक
मनःस्थिति पर निर्भर करती है
सागर में उठा तूफान
किनारे आते आते
क्या तो सुनामी बन जाता है
या फिर शांत
दोनों दशाओं में
उथल पुथल भारी होती है
कभी कभी
जिंदगी भी कुछ ऐसी ही
जिंदगी पर लाचारी होती है।

(139)

नीरवता स्तब्ध है खड़ी
चुंधियायी आंखें
रंगों की तासीर लिए
आंखें मिला रही हैं
राजनीति की टकराहट में
बेचैन सिसकियां चिल्ला रही हैं
दिल पर जख्म गहरा है
न जाने बस्तियों में कौन
अर्ध विक्षिप्त घुस आया है
तलवार बारूद का साया है।

(140)

आनंद की अनुभूति
सागर से निकल कर
पर्वतों पर चढ़ती
मेघ राशि का नाम है
जो पर्वत शिखर पर
समर्पित हो
टकरा टकरा
बरस बरस जाती है
और शीतल कर जाती है
उष्ण मन की तपिश
जिनके दरस को
अंखियाँ तरस तरस जाती है।

(141)

नीहार कुहासा कोहरा
धुँध ही धुँध छाई है हर तरफ
व्योम पर
क्षितिज से क्षितिज तक
शायद
रुष्ट हैं देव अर्यमा
क्योंकि
सच तो यही है
गहन अंधकार है
प्रातः में भी
प्रतीक्षा है चेतनता आएगी
जड़ हुए जग को
जागृत कर
नव स्फूर्ति देगी।

(142)

मैं तो एक घायल बाज हूँ
पड़ा हूँ बेख़ौफ़
अपनी ऊर्जा संचित करने को
रात में महक रही हैं
रातरानी की कलियाँ
उनकी महक
मेरा सुस्त बदन
न जाने कब समाप्त हो
यह महक
चलो उसके पहले
पुनः उड़ जाऊं
मुक्त गगन में
उन्मुक्त स्वयं को पाऊं।

(143)

ग्रीष्म में
गगन से बरसती आग
धरा पर दग्ध
अंगार लिए
क्षणिक जल बूँदें
तृप्त नहीं कर सकती
तृषित धरा को,
न ही
तृप्त कर सकती है
अंतस में उबलती
विचारों की मंथरा को।

(144)

शून्य के इस पार भी
शून्य के उस पार भी
कुछ है
उस कुछ को ढूंढ़ लिया
तो
शून्य
शून्य नहीं रहेगा
विशाल गगन सा हो जाएगा।

(145)

शून्य आसमान
धुआं धुआं जिंदगी
विलुप्त
टकराती सी
शुरू में घनी घनी
फिर धीरे धीरे फैलती
बादलों के गगन में
लुप्त।
न कोई स्रोत
न कोई कारण
न कोई लक्ष्य
बस
जागृत कभी
तो कभी सुप्त
जीवेद् शरदः शतम
अनुभुक्त।

(146)

आकांक्षाएं कामनायें
सम्बन्धों की प्रगाढ़ता पर
आश्रित होती हैँ
अपनत्व जहाँ हो
वहाँ
उम्मीदें
कुछ ज्यादा बढ़ जाती हैँ
ज्यूँ साहिल पर आकर
लहरें ज्यादा मचलती हैँ
बार बार सागर के
आगोश में समा जाती है।

परिचय

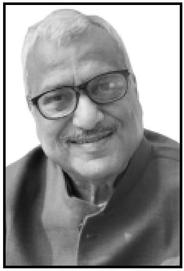

सुरेश चौधरी 'इंदु'

पिता का नाम : स्व. भोलाराम चौधरी
माता का नाम : श्रीमती दुर्गावती चौधरी
जन्म स्थान : जमशेदपुर (वर्तमान में झारखंड)
जन्म तिथि : 14 जुलाई, 1952

शिक्षा : विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद; (BSc, FCA, PhD) आरंभिक शिक्षा जमशेदपुर भारतीय मोडल स्कूल कक्षा 7 तक, फिर ADLS हाईस्कूल में मैट्रिक 1963–1967, फिर जमशेदपुर को–ऑपरेटिव कॉलेज से विज्ञान में स्नातक (1967–1971)। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स कोलकाता (दास एंड प्रसाद) से चार्टर्ड (1972–1976)।

जीवन वृतांत : 1977–1982, उषा अलॉयस एंड स्टील्स में मैनेजर फाइनेंस के रूप में कार्य। 1982–83 बिहार अलॉइ स्टील्स लिमिटेड में वाइस प्रेसीडेंट कमर्शियल। तत्पश्चात् निजी इस्पात एवं इस्पात से संबंधित कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये। 2008 से 2011 तक आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्य किया।

लेखन में रूचि 2011 से स्वास्थ्य के चलते। सभी कार्य छोड़कर केवल अध्ययन एवं लेखन की ओर झुकाव, तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य। लेखन में विशेष कर– हाइकु, मुक्त छंद, छंद मुक्त, छंद, बाल कविता, आलेख, आध्यात्म, शोध वैदिक सनातन

दर्शन एवं आर्थिक विषय पर। भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखों एवं कविताओं का नियमित प्रकाशन, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉग अकेदेमिया, एडु में नियमित लेख प्रकाशन। 'ताजा टीवी' एवं 'दूरदर्शन' पर समय-समय पर चर्चाओं में भागीदारी।

अनुवादित कार्य का विवरण

1.1 श्री दुर्गतिविनाशनी : श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद छंद मुक्त लयबद्ध जिसकी विवेचना महामंडलेश्वर साक्षी जी महाराज एवं प्रसिद्ध साहित्य समीक्षक श्री वीरेन्द्र गोस्वामी, जयपुर ने लिखी। पुस्तक के दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

1.2 प्रांजलि (भाग-2) : श्रीमद्भागवत एवं वेदों के 101 सूक्तों पर आधारित छंद मुक्त प्रार्थनाएँ, समीक्षा डॉ. उम्मेद सिंह बैद, पुस्तक में प्रार्थना के साथ उधृत श्लाकों की संख्या भी दी गयी है।

1.3 वेद से वेदांत तक-मूल पाठ सहित : 9 उपनिषद : ईशोपनिषद्, केन उपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्न उपनिषद, मंडूक उनिपद, मांडूक्य उपनिषद, ऐतरिय उपनिषद, तैतरीय उपनिषद, श्वेताश्वेतर उपनिषद का छंद मुक्त काव्यात्मक अनुवाद, पुरुष सूक्त एवं नासदीय सूक्त का छंदोबद्ध अनुवाद।

समीक्षा : अंशु त्रिपाठी, प्रसिद्ध कवयित्री, डॉ. अल्पना गोस्वामी, विभागाध्यक्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग।

1.4 आदिशंकर रसमाधुरी :

मूल संस्कृत पाठ के साथ : आदि शंकराचार्य के निम्नलिखित स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद

1. भजगोविंद : चौपाई एवं दोहों में अनुवाद
2. महिषासुर मर्दिनी : कनक मंजरी छंद
3. देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् : हरिगीतिका छंद में
4. निर्वाण षटकम : कुकुम्भ छंद में
5. श्री गंगा स्त्रोत : लावणी छंद में अनुवाद
6. कनकधारा स्त्रोत : मूल छंद में

आशीर्वचन प्रसिद्ध गौ भक्त संत एवं रामजन्मभूमि के प्रमुख आचार्य धर्मेन्द्र द्वारा।

1.5 हर हर महादेव : मूल संस्कृत पाठ के साथ मंत्रों एवं स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद :

विषय की विषद व्याख्या स्व-लिखित

1. शिव स्तुति-स्व-रचित संस्कृत में
2. महामृत्युंजय मंत्र : धनाक्षरी में

3. शिव पंचार मंत्र : चतुष्पदी में

4. द्वादश ज्योर्तिलिंग : चतुष्पदी में

5. रावण रचित शिवताण्डवस्तोत्रज़्

यह स्त्रोत अनंग शेखर छंद में लिखा गया है, इसे इसी छंद में अनुवाद किया है।

6. श्री शिव महिम्न स्तोत्र : चतुष्पदी एवं लावणी छंद

7. रूद्राष्टक (तुलसीदास रचित) : चतुष्पदी में

8. शिव मानस पूजा स्त्रोत : षष्टपदी में आशीर्वचन आचार्य धर्मेन्द्र जी एवं बालव्यास जी द्वारा

1.6 सुभाषितम : मूल संस्कृत श्लोकों सहित भारतीय नीतिशास्त्र एवं विभिन्न सुभाषित 108–108 श्लोकों की दो माला का दोहों में अनुवाद।

1.7 गोपी गीत : यूँ तो गोपी गीत 19 श्लोकों का एक गीत जो इंदिरा छंद में लिखा गया है, परंतु यह गहन शोध का विषय है एवं प्रत्येक श्लोक अध्यात्म की ऊँचाई को छूता दृष्टिगत है। इसका अनुवाद भी इंदिरा छंद में ही किया है और विस्तार और विस्तृत भाष्य विभिन्न छंदों में है। यह एक खंड काव्य है।

1.8 सुर तरिंगिणी : देव सरिता माँ गंगा की समस्त कहानी एवं संस्कृत मूल के साथ गंगा लहरी, गंगा स्त्रोत, गंगाष्टकम (कालिदास, आदिशंकर, वाल्मीकि द्वारा रचित) का छंदों में अनुवाद, गंगा का अवतरण हुआ है तो क्या हुआ होगा व्यवहारिक दृष्टिकोण।

1.9 अप्रकाशित : भागवत में वर्णित अनेक गीतों एवं स्तुतियों जैसे, भ्रमर गीत, वेणु गीत, वर्षा गीत, कुन्ती द्वारा स्तुति, गर्भ स्तुति, गज मोक्ष मंत्र आदि का मूल संस्कृत पाठ सहित विभिन्न छंदों में अनुवाद।

विवरण इस प्रकार है :–

क्रम	**सूक्त/गीत/स्तुति वेदों से**	**मूल छंद**	**अनुवाद का छंद**
1.	पुरुष सूक्त	निचृदनुष्टुप	चतुष्पदी
2.	नाशदीय सूक्त	नीचृत्रिष्टुप	चतुष्पदी
3.	हिरण्यगर्भ सूक्त	त्रिषटुप	लावणी
4.	संज्ञान सूक्त	विराननुष्टुप	गीतिका
5.	श्री सूक्त	महा जगति	हरिगीतिका
	भागवत के गीत/स्तुति		
6.	भ्रमर गीत	शार्दूलविक्रीडीत	हरिगीतिका
7.	वर्षा गीत	वसांततालिका	दोहा–चौपाई

8.	यूगल गीत	स्वागता	स्वागता
9.	वेणु गीत	वंशस्थ	हरिगीतिका
10.	प्रणय गीत	उपेन्द्रवज्रा	कुकुम्भ
11.	धुन गीत	वसंततालिका	कुकुम्भ
12.	गजेन्द्र मोक्ष	स्तरगधरा	दोहा–चौपाई
13.	कुंती स्तुति		चतुष्पदी
14.	वसुदेव स्तुति		चतुष्पदी
15.	गर्भ स्तुति		धनाक्षरी
16.	चतुर्शलोकी भागवत		धनाक्षरी
17.	अन्यः कृष्णाष्टकम	पैंचचामर	पैंचचामर

अन्य भाषा से अनुवाद

2.10 अड़सठ शरद रवीन्द्र की शरण : रवीन्द्र के मूल 68 बंगला गीतों को देवनागरी में लिखकर अनुवाद प्रथम अनुवाद है, जो छंदबद्ध है। अभी तक जितने भी अनुवाद हुए हैं, वे सब छंद मुक्त अतुकांत या तुकांत अनुवाद ही हुए हैं। इसकी समीक्षा प.बंगाल के पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. राजश्री शुक्ल, प.बंगाल शिक्षण विश्वविद्यालय की उपकुलपति डॉ. सोमा बंदोपाध्याय एवं पं. सुरेश नीरव ने की है।

अध्यात्म एवं धर्म पर आधारित पुस्तकें

3.11 भारतीय दर्शन : भारत के मुक्त 6 दर्शनों का परिचय। इसमें सनातन धर्म के आस्तिक दर्शनों की प्रारंभिक जानकारी है।

3.12 भारत की अन्य दर्शन : भारत के अन्य दर्शन जिन्हें नास्तिक दर्शन कहा गया है। उनके बारे में प्रारंभिक जानकारी, ये दर्शन जैसे चवार्क, बुद्ध, जैन दर्शन हैं।

3.13 वेदान्त : आदि शंकराचार्य द्वारा चार धामों के चार महावाक्य की विस्तृत चर्चा, जिसकी भूमिका लिखी है दर्शन के महाज्ञानी डॉ. उम्मेद सिंह वैद ने।

3.14 श्रीमद्भागवत महापुराण–परिचय एवं समीक्षा : श्रीमद्भागवत को पंचम वेद भी कहा गया है पर आजकल हर गली–मोहल्ले में हम भागवत के पाठ पर फिल्मी तर्ज के गानों पर लिखे भजनों पर नृत्य देखते हैं। एक व्यवहारिक दृष्टि से भागवत की समीक्षा की गई है, इसमें भागवत कथा के बारे में नहीं बल्कि उसके लिखने के उद्देश्य के बारे में बताया गया है।

3.15 वेदों का परिचय एवं समीक्षा : चार वेद क्या है। इनमें क्या विषय वस्तु है। इनका भाष्य किसने–किसने लिखा है। उन भाष्यों में क्या है। समुचित जानकारी जिसे

एक हिन्दू को ही नहीं बल्कि विश्व के हर प्राणी को जानना आवश्यक है।

3.16 मनुस्मृति-परिचय एवं समीक्षा : कालांतर में मनुस्मृति को अभिशाप घोषित कर दिया गया है, जबकि यह हर भारतीय की और भारतीय संस्कृति की रूलबुक है। इसमें जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों के निर्वहन का नियम बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रेक्षप मंत्रों एवं शंकाओं का निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

3.17 भ्रम और भ्रांतियाँ : सनातन धर्म में व्याप्त भ्रम जैसे दलित का शोषण 5000 वर्षों से हो रहा है इत्यादि का तथ्यपरक उत्तर, कई भ्रांतियाँ दूर होंगी इसे पढ़ने से।

शोध पुस्तक

3.18 चमत्कृत करती भाषा संस्कृत : संस्कृत कितनी चमत्कारी भाषा है, उसके हर पहलू पर क्रमशः आलेख लिखे थे, उनका संग्रह इस पुस्तक में है।

काव्य

4.19 तिमिर ढलेगा : आशाओं को जागृत करती 101 प्रेरक कविताओं की पुस्तक जिसका तीसरा संस्करण छप कर आ चुका है।

4.20 बुलबुले-सी जिंदगी : 101 छंद मुक्त कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखी हुई, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध गीतकार रमेन्द्र मोहन त्रिपाठी एवं प्रसिद्ध लेखक शिखर चंद जैन ने लिखी है, पुस्तक का दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

4.21 कुछ माणिक कुछ मोती : प्रांजल हिन्दी में रचित छंदबद्ध कविताएँ अलग-अलग विषय पर क्रमबद्ध, समीक्षा प्रख्यात गीतकार श्री विष्णु सक्सेना, श्रीमती सरिता शर्मा एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने लिखी हैं, पुस्तक आर्ट पेपर पर बहुरंगी है।

4.22 प्रांजलि : जीवन दर्शन पर आधारित 101 प्रार्थनाएँ, छंद मुक्त, समीक्षा वीरेन्द्र गोस्वामी, सर्वेश अस्थाना एवं भागवताचार्य पं. श्रीकांत शर्मा बालव्यास जी ने लिखी है। पुस्तक के दो संस्करण आ चुके हैं।

बाल गीत

4.23 आसमान को छू लें : जयपुर के कल्याण सिंह शेखावत के संग यह बाल गीत की पुस्तक बहुरंगी बड़ी साइज में बालकों को मोहती बनी है, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध बाल लेखक संजय जायसवाल 'संजय' एवं आकाशवाणी, कोलकाता की उद्घोषिका सविता पोद्दार ने लिखी है।

अन्य काव्य

4.24 हे माँ : कुल देवी शक्ति स्वरूप माँ जीण भवानी को समर्पित पुस्तिका जिसमें संस्कृत स्तुति से आरंभ कर के 18 सनातन छंदों की रचनाएँ लिखी गई है।

4.25 माँ : मेरी जननी को हर वर्ष काव्यांजली देता रहा हूँ, उनके देहावसान पर समर्पित पुस्तिका, जिसमें 20 गीत छंद बद्ध एवं छंद मुक्त दोनों है।

4.26 शून्य से शून्य तक : दृश्य बनाते हुए 81 कविताएं जो जीवन के विभिन्न आयामों पर लिखी गई है, ये कविताएं छंद मुक्त ले बद्ध है।

विविध

5.27 मूल्यांकन : भारतीय अर्थव्यवस्था का आंकलन 2019 में इसे स्व. विलास राव जी के सहयोग से लिखा था। भारत अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर गहन चिंतन आंकड़ों के साथ एवं सुझाव प्रधानमंत्री कार्यालय भेजे गए, जिसमें कई सुझावों को मंजूरी मिली।

5.28 भारत की आर्थिक स्थिति में क्या उचित (प्रकाशनाधीन) : समय-समय पर भारतीय अर्थव्यवस्था पर लेख लिखता रहा हूँ। नोटबंदी का सुझाव भी देने वाले कुछ लोगों में से मैं भी था। इन लेखों को एकत्रित कर पुस्तक का रूप दिया गया है।

5.29 भारतीय काव्य संहिता : भारत में प्रचलित सभी काव्य विधाओं का विवरण लिखने की विधा कैसे लिखें, किन बातों का ध्यान रखें-छंद, छंद मुक्त, मुक्त छंद, हाइकु, गीतिका, गज़ल इत्यादि।

यात्रा संस्मरण

5.30 ऐक्सडेनल टूर इन हाइबेरनेसन : यात्रा संस्मरण, लेख की अनियोजित यात्रा के 7 माह जिसमें उसने पूरे भारत का भ्रमण किया। उन भ्रमणों का रोचक विवरण ललित निबंध रूप में। पुस्तक निखिल प्रकाशन आगरा से प्रकाशित।

संवत 2081 में प्रकाशित

5.31 : इंदु प्रभा - छंद बद्ध कविताओं का संग्रह जिन्हें विषयानुसार अनुक्रमित किया गया है।

5.32 : मैं जीवन दंड विधान हूं-नवगीत एवं छंद वद्ध गीतों का संग्रह

5.33 : लघु उपनिषद त्रयी (मांडूक्य, ईश, केन उपनिषद का व्यावहारिक अर्थों सहित भाष्य मूल श्लोक के साथ)

5.34 : इंदु पदावली (कृष्ण भक्ति पद) : 92 कृष्ण भक्ति के एवं 21 राम भक्ति के पद। पद जो एक लुप्त होती विधा है, उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास।

5.35 : इंदु पदावली (भाग 2) निर्गुण पद : कबीर, रैदास, दादू इत्यादि संतों की परंपरा को बढ़ाते हुए 95 निर्गुण पद।

5.36 : दोहांजलि, निर्गुण सगुण एवं नीति परक 711 दोहों का अनुपम संग्रह जिसमें 51 दोहे मीतू कनोडिया जी के सौजन्य से समाहित किये गए हैं।

कुछ प्रमुख सम्मान :

1. भारत गौरव (इस्पात में अभूतपूर्व कार्य हेतु तत्कालीन इस्पात मंत्री के कर-कमलों से दिल्ली की एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा।)
2. केंद्रीय सचिवालय द्वारा राजभाषा गौरव पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी द्वारा।
3. विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि विक्रमशिला हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा।
4. साहित्य शिरोमणि दामोदरदास चतुर्वेदी साहित्य शिखर सम्मान 2021 एवं 2022 (पूर्व में यह सम्मान अटल बिहारी वाजपेयी, पंडित गोपालदास नीरज, उदप्ताप सिंह जी इत्यादि को मिला है।)
5. श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार साहित्य सम्मान, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन पूर्वी सिंहभूम शाखा द्वारा।
6. साहित्य मार्तण्ड सम्मान प्रसिद्ध संस्था बिहार हिंदी सम्मेलनी, पटना द्वारा।
7. हिंदी साहित्य शिरोमणि मानद सम्मान, साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा।
8. 'हिंदी सेवा सम्मान' श्रवण संस्था व शोध संस्थान, हरिद्वार द्वारा।
9. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' साहित्य रत्न सम्मान सह नगद राशि प्रख्यात संस्था अभ्युदय द्वारा।
10. मानद पीएचडी वैदिक हिंदी साहित्य में लेगॉस यूनिवर्सिटी की शोध इकाई 'इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनस मैनिज्मन्ट एंड रेसर्च टेक्नोलॉजी' द्वारा।

विशेष उपलब्धि : 1116 दिनों में 1000 भजन लिखकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जो कि इंटरनेशनल बुक ऑफ रेकॉर्ड्स द्वारा प्रकाशित और प्रमाणित किया गया।

साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधि : अंतर्राष्ट्रीय संस्था रचनाकार (शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन का एक प्रकल्प) के संस्थापक सभापति, संस्था प्रति वर्ष साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु दस व्यक्तियों को सम्मानित करती है एवं नगद राशि भी भेंट करती है।

शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक न्यासी जो कैंसर पीड़ित असहाय रोगियों के नि:शुल्क चिकित्सा की सुविधा प्रदान करती है।